Indian Journal of Research PARIPEX

Original Research Paper Education

Nk=kokl esa jgus okys Hkkoh f'k{kdksa ds usr`Ro xq.kksa dk v/;;u

j.k Lokeh ¼'kks/kkFkhZ½

1- izLrkouk &

प्राचीन समय में शिक्षक–शिक्षा शिष्यता पद्धति पर आधारित थी, तथा शिष्य गुरूकूल में रहकर शिक्षा ग्रहण करते थे, शिक्षा ग्रहण करने के बाद अध्यापन व्यवसाय करते थे। किसी भी देश के विकास में शिक्षक एक महत्वपूर्ण धुरी है । वर्तमान में शिक्षक शिक्षा प्रशिक्षण पर आधारित है। प्रत्येक देश को प्रभावी अध्यापकों की आवश्यकता है और निःसन्देह भविश्य में भी रहेगी। अतः प्रभावी शिक्षक की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। जहां पर प्रशिक्षण कॉलेजों की सुविधा उपलब्ध है, वहाँ के प्रशिक्षणार्थी तो प्रशिक्षण प्राप्त कर लेते है, किन्तु जहाँ पर प्रशिक्षण कॉलेजों का अभाव है वहां प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए दूर नगरों, तथा महानगरों में जाना पड़ता है, तथा छात्रावास में रहना पड़ता है।

छात्रावास की अच्छी व्यवस्था का उनके व्यक्तिगत जीवन पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। कई बार छात्रावासों का वातावरण दूषित भी हो जाता है जिससे छात्राध्यापकों के सामने कई कठिनाईयाँ आती है व्यक्ति जिस वातावरण में रहता है वह उसके लिए बड़ा महत्वपूर्ण होता है। उसकी इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति वातावरण द्वारा होती है जहाँ प्रशिक्षणार्थी छात्रावास के बनाये नियमों व अनुशासन में बंधे होते हैं तथा सभी प्रशिक्षणार्थी समान समझे जाते हैं ऐसे में प्रशिक्षणार्थी के व्यक्तित्व में नेतृत्व गुणों के विकास की अधिक सम्भावनाएँ होती हैं

गुरू द्वारा दी जाने वाली शिक्षा आज भी हमारे मन मस्तिश्क में शिक्षकों एवं भावी शिक्षकों में नेतृत्व कुशलता के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने के प्रति सावधान कराती रही है ।

2- v/;;u dk egRo ,oa vkSfpR; &

समाज में शिक्षा तथा शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों के इसी महत्त्वपूर्ण स्थान व दायित्व को ध्यान में रखते हुए ही विभिन्न शोधकार्यों के माध्यम से भावी शिक्षकों के व्यक्तित्व के विभिन्न गुणों का पता लगाया जाना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि इन्ही गुणों का विकास उसे अपने विद्यार्थियों में करना है। इस दृष्टि से शोधकर्त्री द्वारा किये जा रहे इस शोध को महत्त्वपूर्ण कहा जा सकता है

यह शोध इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण कहा जा सकता है, कि छात्रावास में रहने वाले भावी शिक्षकों में नेतृत्व गुणों का अध्ययन हो सकेगा चूंकि शिक्षक ही संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का आधार स्तंभ है, अतः उसका सुदृढ़ होना ही समाज व राष्ट्र के लिए उपयोगी है। अतः छात्रावास में रहने वाले भावी शिक्षकों में नेतृत्व गुणों का सम्यक व संतुलित होना अत्यंत आवश्यक है। इस दृष्टि से प्रस्तुत शोध के माध्यम से छात्रावास में रहने वाले भावी शिक्षकों के व्यक्तित्व के इन चरों के वास्तविक स्वरूप की जानकारी प्राप्त हो सकेगी, जिसके आधार पर समाज व सरकार जागरूक होकर छात्रावास में रहने वाले भावी शिक्षकों में परिलक्षित होने वाली कमी को दूर करने का प्रयास कर सकेंगे तथा साथ ही शिक्षा शास्त्रियों द्वारा ऐसे कार्यक्रम चलाने का अवसर प्राप्त होगा जिससे भावी शिक्षकों की प्रभावशीलता बढ़ायी जा सके।

इस शोध की महत्ता इस रूप में भी कही जा सकती है, कि छात्रावास में रहने वाले भावी शिक्षकों पर किये जाने वाले इस शोध के निष्कर्षों से शिक्षा जगत की भावी आयोजनाओं के लिए अनेक आधारभूत बिन्दु 'मील के पत्थर' साबित हो सकेंगे, जिनकी अनुभूति व निर्देशन में विशिष्ट शैक्षिक लक्ष्यों व सफलताओं की प्राप्ति के मार्ग खुलने की संभावनाएं बनती है।

यह शोधकार्य इसलिए भी औचित्यपूर्ण कहा जा सकता है, कि यह पता लगाया जाये कि छात्रावास में रहने वाले भावी शिक्षकों में उक्त गुणों का विकास हो पाया है, या नहीं? भावी शिक्षक होने के नाते प्रशिक्षणार्थियों का यह कर्त्तव्य बनता है, कि वे स्वयं अपने नेतृत्व गुणों का समुचित विकास करने का प्रयास करें, ताकि शैक्षिक स्तर में गिरावट आने से रोका जा सके।

वर्तमान में बदलते परिवेश के आधार पर हमारी शिक्षा व्यवस्था एवं भावी शिक्षकों को लेकर अनेक अपेक्षाएं हैं, तथा अपने चारों तरफ दृष्टि डालने पर यह ज्ञात होता है, कि वर्तमान की शैक्षिक माँगों के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था परिपूर्ण दिखाई नहीं दे रही है। अतः आज आवश्यकता छात्रावास में रहने वाले भावी शिक्षकों को वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप अपने नेतृत्व गुणों का समुचित विकास करे। अतः इस दृष्टि से देखे तो यह शोधकार्य पर्याप्त औचित्यपूर्ण एवं सार्थक नजर आता है।

3- v/;;u ds mn~ns'; &

1. छात्रावास में रहने वाले ग्रामीण तथा शहरी भावी शिक्षकों के नेतृत्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. छात्रावास में रहने वाले ग्रामीण तथा शहरी भावी अध्यापकों के नेतृत्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. छात्रावास में रहने वाले ग्रामीण तथा शहरी भावी अध्यापिकाओं के नेतृत्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4- v/;;u dh ifjdYiuk,¡ &

1. छात्रावास में रहने वाले ग्रामीण तथा शहरी भावी शिक्षकों के नेतृत्व गुणों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. छात्रावास में रहने वाले ग्रामीण तथा शहरी भावी अध्यापकों के नेतृत्व गुणों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. छात्रावास में रहने वाले ग्रामीण तथा शहरी भावी अध्यापिकाओं के नेतृत्व गुणों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5-izLrqr 'kks/k esa iz;qDr 'kks/k fof/k &

प्रस्तुत अध्ययन ''छात्रावास में रहने वाले भावी शिक्षकों के नेतृत्व गुणों का अध्ययन'' में अनुसंधान की विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है।

6- U;kn'kZ &–

1. अध्ययन में चूरू व जयपुर जिले के छात्रावास में रहने वाले 200 बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को न्यादर्श में सम्मिलित गया है। जिसमें 100 छात्राध्यापक (50 ग्रामीण तथा 50 शहरी) तथा 100 छात्राध्यापिकाएं (50 ग्रामीण तथा 50 शहरी) को ही न्यादर्श के रूप में शामिल किया गया है।

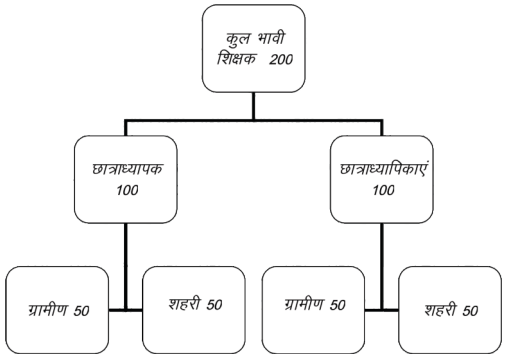

7- iz;qDr midj.k &

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा दत्त संकलन हेतु शोध समस्या के चर से सम्बन्धित निम्न मनोवैज्ञानिक मानकीकृत परीक्षणों का प्रयोग किया गया है।

Ø-la-	ijh{k.k dk uke	o"kZ	fuekZ.kdÙkkZ
1.	नेतृत्व प्रभावशीलता मापन	(2001)	डॉ. हसीन ताज

8. iz;qDr lkaf[;dh &

1. मध्यमान
2. प्रमाप विचलन
3. क्रान्तिक अनुपात

9- U;kn'kZ p;u fof/k &

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श चयन हेतु स्तरीकृत यादृच्छित प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया है।

10- fo'ys"k.k dk vk/kkj ifjdYiuk &

परिकल्पना संख्या – 1 छात्रावास में रहने वाले ग्रामीण तथा शहरी भावी शिक्षकों की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

lkj.kh la[;k & 1

छात्रावास में रहने वाले ग्रामीण तथा शहरी भावी शिक्षकों की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता ds e/;eku esa vUrj dh x.kuk

वर्ग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाप विचलन (σ)	क्रान्तिक अनुपात मान (CR Value)	सार्थकता स्तर 0.05	सार्थकता स्तर 0.01
ग्रामीण भावी शिक्षक	100	159.73	13.21	2.07	सार्थक अन्तर है।	सार्थक अन्तर नहीं है।
शहरी भावी शिक्षक	100	155.91	12.86			

$df=N_1+N_2-2=100+100-2=198$)

O;k[;k & उक्त सारणी में छात्रावास में रहने वाले ग्रामीण तथा शहरी भावी शिक्षकों की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 159.73 एवं 155.91 तथा मानक विचलनों का मान क्रमशः 13.21 एवं 12.86 प्राप्त हुए हैं। इन मानों के आधार पर दोनों समूहों के मध्य

क्रान्तिक अनुपात मान (CR Value) 2.07 प्राप्त हुआ है। क्रान्तिक अनुपात मान सारणी में स्वतंत्रता के अंश 198(df) स्वतंत्रता के अंश पर 0़05 सार्थकता स्तर पर 1.97 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.60 दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त क्रान्तिक अनुपात मान 0.05 सार्थकता स्तर से उच्च व 0.01 सार्थकता स्तर से निम्न है। अतः यहाँ पर निर्धारित शून्य परिकल्पना को सार्थकता के 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत किया जाता है। तथा निश्कर्श के रूप में कहा जा सकता है कि छात्रावास में रहने वाले ग्रामीण तथा शहरी भावी शिक्षकों की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता में आंशिक अन्तर है। प्राप्त मध्यमानों के आधार पर कहा जा सकता है कि छात्रावास में रहने वाले ग्रामीण भावी शिक्षकों की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता का स्तर छात्रावास में रहने वाले शहरी भावी शिक्षकों के स्तर की अपेक्षा उच्च पाया गया।

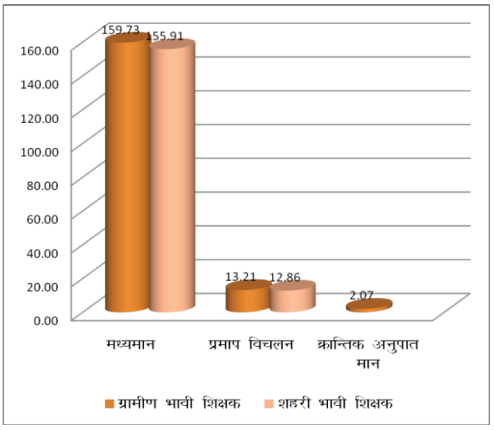

vkjs[k l[;k%1
छात्रावास में रहने वाले ग्रामीण तथा शहरी भावी शिक्षकों की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता के मध्यमानों, मानक विचलनों, क्रान्तिक अनुपात मान का दण्डारेख प्रदर्शन

ifjdYiuk l[;k & 2 छात्रावास में रहने वाले ग्रामीण तथा शहरी भावी अध्यापकों की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

lkj.kh l[;k & 2
छात्रावास में रहने वाले ग्रामीण तथा शहरी भावी अध्यापकों की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता d e/;eku d vUrj dh x.kuk

वर्ग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाप विचलन (σ)	क्रान्तिक अनुपात मान (CR Value)	सार्थकता स्तर	
					0.05	0.01
ग्रामीण भावी अध्यापक	50	161.62	12.43	1.43	सार्थक अन्तर नहीं है।	सार्थक अन्तर नहीं है।
शहरी भावी अध्यापक	50	157.94	13.26			

($df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$)

0;k[;k & उक्त सारणी में छात्रावास में रहने वाले ग्रामीण तथा शहरी भावी अध्यापकों की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 161.62 एवं 157.94 तथा मानक विचलनों का मान क्रमशः 12.43 एवं 13.26 प्राप्त हुए हैं। इन मानों के आधार पर दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात मान (CR Value) 1.43 प्राप्त हुआ है। क्रान्तिक अनुपात मान सारणी में स्वतंत्रता के अंश 98(df) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.98 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.63 दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त क्रान्तिक अनुपात मान 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर से निम्न है। अतः यहाँ पर निर्धारित शून्य परिकल्पना को सार्थकता के दोनों स्तरों पर स्वीकृत किया जाता है। तथा निश्कर्श के रूप में कहा जा सकता है कि छात्रावास में रहने वाले ग्रामीण तथा शहरी भावी अध्यापकों की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। प्राप्त मध्यमानों के आधार पर कहा जा सकता है कि छात्रावास में रहने वाले ग्रामीण भावी अध्यापकों की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता का स्तर छात्रावास में रहने वाले शहरी भावी अध्यापकों के स्तर की अपेक्षा उच्च पाया गया।

vkjs[k l[;k%2

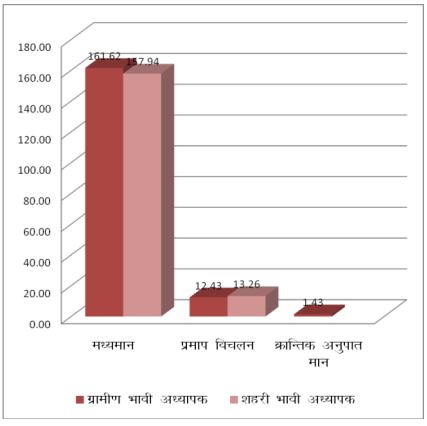

छात्रावास में रहने वाले ग्रामीण तथा शहरी भावी अध्यापकों की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता के मध्यमानों, मानक विचलनों, क्रान्तिक अनुपात मान का दण्डारेख प्रदर्शन

ifjdYiuk l[;k & 3 छात्रावास में रहने वाली ग्रामीण तथा शहरी भावी अध्यापिकाओं की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

lkj.kh l[;k & 3
छात्रावास में रहने वाली ग्रामीण तथा शहरी भावी अध्यापिकाओं की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता के मध्यमान के अन्तर की गणना।

वर्ग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाप विचलन (σ)	क्रान्तिक अनुपात मान (CR Value)	सार्थकता स्तर	
					0.05	0.01
ग्रामीण भावी अध्यापक	50	157.84	13.82	1.52	सार्थक अन्तर नहीं है।	सार्थक अन्तर नहीं है।
शहरी भावी अध्यापक	50	153.88	12.26			

($df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$)

0;k[;k & उक्त सारणी में छात्रावास में रहने वाली ग्रामीण तथा शहरी भावी अध्यापिकाओं की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 157.84 एवं 153.88 तथा मानक विचलनों का मान क्रमशः 13.82 एवं 12.26 प्राप्त हुए हैं। इन मानों के आधार पर दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात मान (CR Value) 1.52 प्राप्त हुआ है। क्रान्तिक अनुपात मान सारणी में स्वतंत्रता के अंश 98(df) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.98 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.63 दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त क्रान्तिक अनुपात मान 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर से निम्न है। अतः यहाँ पर निर्धारित शून्य परिकल्पना को सार्थकता के दोनों स्तरों पर स्वीकृत किया जाता है। तथा निश्कर्श के रूप में कहा जा सकता है कि छात्रावास में रहने वाली ग्रामीण तथा शहरी भावी अध्यापिकाओं की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। प्राप्त मध्यमानों के आधार पर कहा जा सकता है कि छात्रावास में रहने वाली ग्रामीण भावी अध्यापिकाओं की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता का स्तर छात्रावास में रहने वाली शहरी भावी अध्यापिकाओं के स्तर की अपेक्षा उच्च पाया गया।

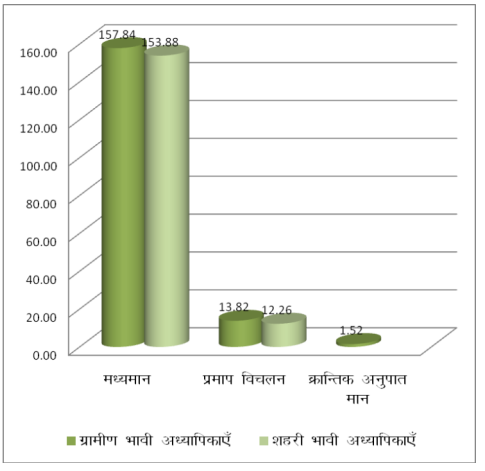

vkjs[k l[;k%3
छात्रावास में रहने वाली ग्रामीण तथा शहरी भावी अध्यापिकाओं की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता के मध्यमानों, मानक विचलनों, क्रान्तिक अनुपात मान का दण्डारेख प्रदर्शन

11- fu"d"k &
निष्कर्ष –

1 छात्रावास में रहने वाले ग्रामीण तथा शहरी भावी शिक्षकों की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता में आंशिक अन्तर है। प्राप्त मध्यमानों के आधार पर कहा जा सकता है कि छात्रावास में रहने वाले ग्रामीण भावी शिक्षकों की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता का स्तर छात्रावास में रहने वाले शहरी भावी शिक्षकों के स्तर की अपेक्षा उच्च पाया गया।

2 छात्रावास में रहने वाले ग्रामीण तथा शहरी भावी अध्यापकों की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। प्राप्त मध्यमानों के आधार पर कहा जा सकता है कि छात्रावास में रहने वाले ग्रामीण भावी अध्यापकों की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता का स्तर छात्रावास में रहने वाले शहरी भावी अध्यापकों के स्तर की अपेक्षा उच्च पाया गया।

3 छात्रावास में रहने वाली ग्रामीण तथा शहरी भावी अध्यापिकाओं की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। प्राप्त मध्यमानों के आधार पर कहा जा सकता है कि छात्रावास में रहने वाली ग्रामीण भावी अध्यापिकाओं की सम्पूर्ण नेतृत्व प्रभावशीलता का स्तर छात्रावास में रहने वाली शहरी भावी अध्यापिकाओं के स्तर की अपेक्षा उच्च पाया गया।

12- 'kf{kd mi;kfxrk &
प्रस्तुत अध्ययन में छात्रावास में रहने वाले भावी शिक्षकों के नेतृत्व गुणों को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। प्राप्त दत्तों का सांख्यिकी विश्लेशण करने पर प्राप्त परिणामों के आधार पर प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित शैक्षिक उपयोग हो सकते है।

1. शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में निरन्तर अन्वेषण के परिणामस्वरूप समाज में एक नवीन वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं समस्याओं को निश्चित रूप से परिभाशित करके उनके निराकरण का

मार्ग दिखाया जा सकता है।

2. प्रस्तुत शोध प्रशिक्षणार्थियों की सोच बदलने में सहायक होगा तथा कार्यक्षेत्र जिसे वे चुनने जा रहे हैं उसमें आवश्यक सुधार करने में यह अध्ययन मददगार साबित होगा।

3. प्रस्तुत शोध भावी शिक्षकों को अच्छे शिक्षक के गुण धारण करने में सहयोग प्रदान करेगा।

4. प्रस्तुत शोध शिक्षक एवं प्रशिक्षणार्थी के बीच मधुर सम्बन्धों के निर्माण में शिक्षकों में सकारात्मक सोच विकसित करेगा।

5. प्रस्तुत शोध के माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों के नेतृत्व गुणों में अन्तर ज्ञात किया जा सकेगा। जो शैक्षिक जगत् के लिए एक वरदान स्वरूप होगा।

6. प्रस्तुत शोध के माध्यम से नेतृत्व को विकसित करने के उपाय हर क्षेत्र में किए जा सकेंगे जिससे प्रशिक्षणार्थी बुद्धिमता, निपुणता युक्त आचरण कर सके।

7. सभी प्रशिक्षणार्थियों में नेतृत्व के प्रति रूचि का विकास किया जा सकेगा।

8. इस प्रकार के शोध कार्य इस क्षेत्र में एक नई दिशा प्रदान करने का कार्य करेंगे। शोधकर्त्री इस प्रकार की शोध समस्याओं पर भविश्य में निरन्तर कार्य करने की प्रबल इच्छुक है।

lUnHk xzUFk lwph (REFERENCES)

1 भटनागर, डॉ. आर.पी. एवं अग्रवाल, विद्या (2009)''शैक्षिक प्रशासन", लॉयल बुक डिपो,मेरठ,पृ.सं.170

2 मेहरोत्रा, डॉ. पी.एन. (2010)''भावी शिक्षा एक परिदृश्य", एकलव्य शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय, टोंक, पृ.249,254

3 सिडाना, प्रो. अशोक शर्मा एवं डॉ. अंजली (2008)"शैक्षिक प्रबन्धन एवं विद्यालय संगठन", शिक्षा प्रकाशन, जयपुर, पृ.सं.. 67

4 शर्मा,आर.ए.(2007)''शिक्षा प्रशासन एवं प्रबन्धन" ,आर.लाल बुक डिपो,मेरठ, पृ.सं.. 294

5 शफाया, आर.एन. एवं शैदा, बी.डी. तथा शुक्ला, सी.एस. (2009)''आधुनिक शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्ध", धनपतराय पब्लिशिंग कम्पनी प्रा. लि., नई दिल्ली, पृ.सं.. 113

6 वर्मा, प्रो. जे.पी. (2011)"शैक्षिक प्रबन्धन", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ. 283

7 व्यास, डॉ. भगवती लाल (2011)"भारत में शैक्षिक व्यवस्था एवं विद्यालय संगठन", राधा प्रकाशन मन्दिर प्रा. लि., आगरा पृ. 296

8 देमेतरा बैतैले,तारा कोल ग्रिडेख,सुषमा लोएब (2009)"प्रभावशाली विद्यालयः उच्चगुणवत्ता वाले शिक्षकों का प्रबन्धन एवं नियुक्ति, विकास एवं संगठन'' CALDER dk;Zi=37] वाशिंगटन डी.सी. शहरी संस्थान

9 Burg, RW(1978),Educational Research an introduction, New York : NC Grow Hill Book Company PP-708

10 Marja, Talvi and Rao, D.B. (2007)'Educational Leadership and Social changes', Discovery Publishing House, New Delhi P.-125-138